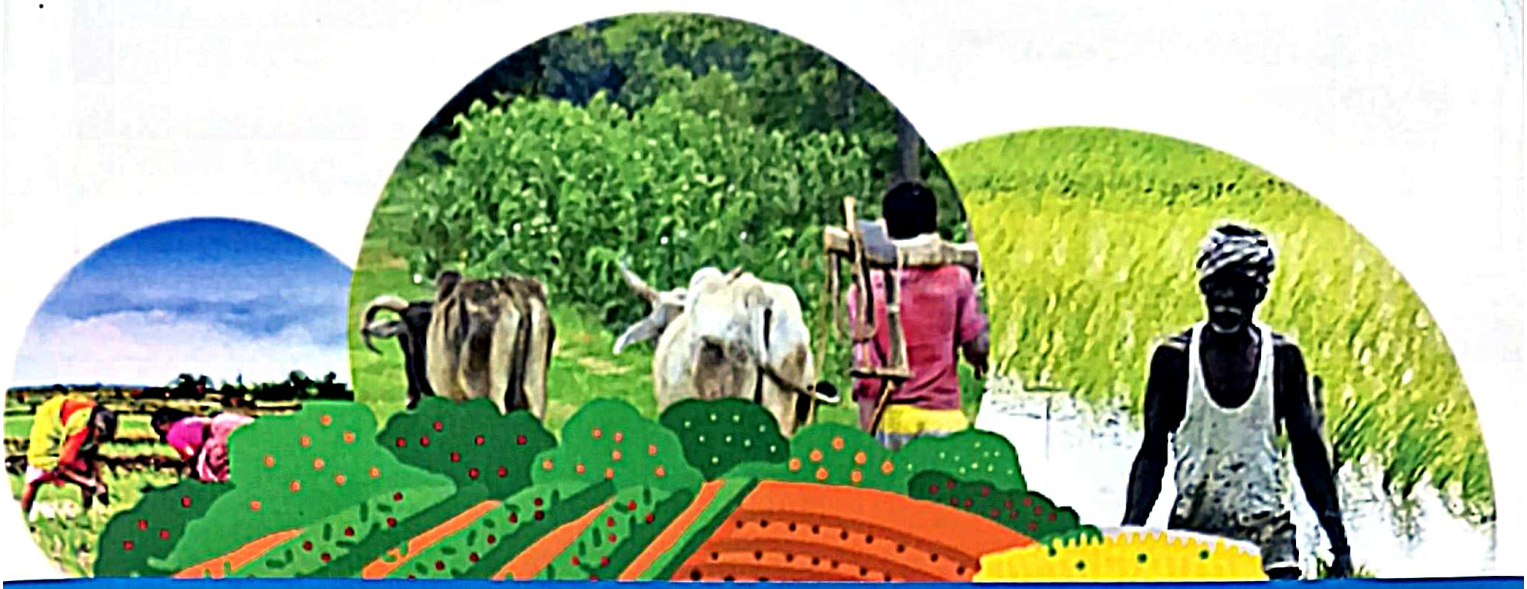

भारत में कृषि विकास

चुनौतियां और अवसर

संपादक

डॉ. राजकुमार नागवंशी

उत्तर प्रदेश के कृषि उत्पादन और उत्पादकता की प्रवृत्ति का अध्ययन

–अश्वनी कुमार
–डॉ. राजकुमार नागवंशी
–धनपत कुमार

सारांश

उत्तर प्रदेश, देश के राजनीतिक और आर्थिक रूप से अग्रणी प्रदेशों में से एक है। यहाँ की अर्थव्यवस्था बड़े पैमाने पर कृषि प्रधान है जिसमें छोटे और सीमित सीमांत किसानों का वर्चस्व है। प्रदेश में 9 कृषि जलवायु क्षेत्र होने के कारण यहां पर कृषि और संभावित गतिविधियों की प्रवृत्ति में सतत विकास का अभाव रहता है। कभी-कभी मानसून और राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण कृषि उत्पादकता और कृषि के कुल कीमत उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अध्ययन विगत कुछ वर्षों में प्रदेश के कृषिगत उत्पादन को देखते हुए कृषि के विभिन्न श्रोतों का अध्ययन करता है। अध्ययन विभिन्न शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्रों क्रमगत अध्ययनों पर आधारित है। अध्यन कहता है कि भारत का लगभग 28 प्रतिशत गेहूँ और 12 प्रतिशत चावल राज्य द्वारा उत्पादित किया जाता है। गन्ने का उत्पादन भी बड़ी मात्र में होता है, जो देश के कुल उत्पादन का 44 प्रतिशत है। हालांकि, राज्य के भौगोलिक क्षेत्रों में कृषि प्रदर्शन में काफी भिन्नता है।

प्रस्तावना

भारत की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था है और कृषि और इससे संबद्ध गतिविधियाँ ग्रामीण लोगों की आजीविका के मुख्य श्रोत हैं। आर्थिक विकास में कृषि की भूमिका को बहुत महत्व दिया जाता है। प्रकृतिवादियों के अनुसार भी कृषि ही केवल क्षेत्र था जो उत्पादन लागत पर आर्थिक अधिशेष का उत्पादन करता था और इसलिए, यह क्षेत्र आर्थिक विकास में सबसे अधिक भूमिका निभाता था। उत्तर प्रदेश भारत के सबसे बड़े राज्यों में से एक है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है यहाँ कुल जनसंख्या का लगभग 65 प्रतिशत भाग कृषि क्षेत्र पर आश्रित है। वर्तमान समय में कृषि, देश के सर्वाधिक जनसंख्या वाले राज्य उत्तर प्रदेश के आर्थिक विकास